ज्ञान शांति मैत्री

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

भाषा के प्रयोग में सामाजिक यथार्थ महत्वपूर्ण- कुलपति राय

भाषाविज्ञान पर त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का हुआ उदघाटन

संगोष्ठी में अध्यक्षीय उदबोधन देते हुए कुलपति विभूति नारायण राय। मंच पर दाएं से प्रो. महेन्द्र कुमार पाण्डेय, प्रो. प्रमोद पाण्डेय, प्रो. उमाशंकर उपाध्याय तथा प्रो. अनिल कुमार पाण्डेय।

संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में वक्तव्य देते हुए प्रो. प्रमोद पाण्डेय। मंच पर दाएं से प्रो. महेन्द्र कुमार पाण्डेय, कुलपति विभूति नारायण, प्रो. उमाशंकर उपाध्याय तथा प्रो. अनिल कुमार पाण्डेय।

संगोष्ठी में उपस्थित प्रतिभागी, अध्यापक तथा छात्र।

भाषा का प्रयोग करते समय भारत के सामाजिक यथार्थ को समझना चाहिए। भाषा बंद कमरे से नहीं बल्कि जनता के बीच जाकर स्वीकृत होती है। उक्त उदबोधन महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति विभूति नारायण राय ने विश्वविद्यालय में 'भाषाविज्ञान और भाषा प्रौद्योगिकी : सांप्रतिक विमर्श के विविध आयाम' विषय पर त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उदघाटन के अवसर पर अध्यक्षीय भाषण में दिये। संगोष्ठी का उदघाटन विवि के हबीब तनवीर सभागार में बुधवार को किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि एवं उदघाटक के रूप में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में भाषाविज्ञान केंद्र के प्रो. प्रमोद कुमार पाण्डेय उपस्थित थे। समारोह में भाषा प्रौद्योगिकी विभाग के अध्यक्ष प्रो. उमाशंकर उपाध्याय तथा प्रौद्योगिकी अध्ययन केंद्र के निदेशक प्रो. महेन्द्र कुमार सी. पाण्डेय मंचस्थ थे।

कुलपति राय ने कहा कि भारत डायवर्सिटी का देश है इसलिए यहां सामाजिक और वैचारिक भिन्नताएं भी हैं। हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के संदर्भ में भाषाओं का प्रयोग करते समय इन भिन्नताओं का सम्मान करना महत्वपूर्ण हो जाता है।

मुख्य अतिथि के रूप में विचार रखते हुए प्रो. प्रमोद कुमार पाण्डेय ने भाषा विज्ञान और भाषा प्रौद्योगिकी के विभिन्न अभिगमों पर विचार रखते हुए कहा कि देखा जाए तो भाषा के आधुनिक सिद्धांत पश्चिम से आए हैं और उनमें खास तरह की विचार प्रक्रिया दिखाई देती है। उन्होंने पिछले साठ वर्षों के भाषा विज्ञान के परिदृश्य पर प्रकाश डालते हुए कम्प्यूटेशनल लिंग्विस्टिक्स की चर्चा की। उन्होंने भाषा विज्ञान के रूपात्मक

और प्रकार्यात्मक अभिगमों को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम तैयार किये जाने पर बल दिया।

उदघाटन के प्रारंभ में संगोष्ठी की प्रस्तावना रखते हुए भाषा प्रौद्योगिकी विभाग के अध्यक्ष प्रो. उमाशंकर उपाध्याय ने कहा कि भाषा विज्ञान मानविकी, सामाजिक विज्ञान व विज्ञान से जुड़ा है। भाषाविज्ञानियों के सिद्धांतों के बीच संवाद स्थापित करने के लिए इस संगोष्ठी का आयोजन किया गया है। संगोष्ठी में विभिन्न आठ सत्रों में भाषा विज्ञान के सभी क्षेत्रों पर चर्चा होगी। समारोह का संचालन डॉ. अनिल कुमार पाण्डेय ने किया।

संगोष्ठी के दौरान 23 फरवरी को प्रो. उमाशंकर उपाध्याय की अध्यक्षता में अर्थविचार और संकेतप्रयोगविज्ञान विषय पर सत्र होगा जिसमें डॉ. संयुक्ता घोष, पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु' एवं प्रो. रामबख्श मिश्र प्रपत्र वाचन करेंगे। सत्र का संचालन बृजेश यादव करेंगे। द्वितीय सत्र संज्ञान और व्याकरण पर होगा जिसकी अध्यक्षता प्रो. पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु' करेंगे। इस सत्र में प्रो. उमाशंकर उपाध्याय, प्रो. वी. रा. जगन्नाथन प्रपत्र पढेंगे। तृतीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. रामप्रकाश सक्सेना करेंगे। अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान (भाषाशिक्षण, कोशनिर्माण, अनुवाद) विषय पर आधारित सत्र में अविचल गौतम, डॉ. अनिल कुमार दुबे, प्रो. के. एल. शर्मा तथा प्रो. भरत सिंह प्रपत्र वाचन करेंगे। संचालन डॉ. रवि कुमार करेंगे। संगोष्ठी के तीसरे और अंतिम दिन 24 फरवरी को प्राकृतिक भाषा संसाधन विषय पर आयोजित सत्र की अध्यक्षता प्रो. महेन्द्र कुमार पाण्डेय करेंगे। इस सत्र में मनीष सिंह, प्रो. पंचानन मोहंती व प्रो. ठाकुरदास प्रपत्र वाचन करेंगे। सत्र संचालन गिरीशचन्द्र पाण्डेय करेंगे। द्वितीय सत्र हिंदी भाषा प्रौद्योगिकी : दशा और दिशा विषय पर होगा जिसकी अध्यक्षता प्रो. ठाकुरदास करेंगे। इस सत्र में डॉ. ज्योत्स्ना रघुवंशी व डॉ. अनिल ठाकुर प्रपत्र वाचन करेंगे। संचालन अंजनी राय करेंगे। संगोष्ठी का समापन 24 को अपराह्न 2.30 बजे प्रतिकुलपति प्रो. ए. अरविंदाक्षन की अध्यक्षता में होगा। इस अवसर पर प्रो. पंचानन मोहंती विशिष्ट अतिथि तथा प्रो. पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु' मुख्य अतिथि होंगे।

बी. एस. मिरगे
जनसंपर्क अधिकारी